Research Guru
Online Journal of Multidisciplinary Subjects (ISSN : 2349-266X)
UGC Approved Journal No. 63726
Impact Factor:3.021 website: www.researchguru.net
Volume-11,Issue-4,March-2018

देवनागरी लिपि का आविर्भाव और उसकी विकास-यात्रा

Paras Chaudhari

M.A., B.Ed., M.Phil. (Hindi)

Contact No.-963816698

देवनागरी लिपि के इतिहास के सूत्रों को खोजने से पहले हमें भारत में लेखन की शुरूआत कैसे हुई... इसका पता लगाना होगा | भारत के प्रथम ग्रंथ रुग्वेद का रचना काल कम से कम १२०० ई.पू. तो माना ही जा सकता है | इसकी भाषा प्राचीन वैदिक संस्कृत है, लेकिन एक लंबे समय तक इसको लिपिबद्ध करने कोई प्रमाण इतिहास में नहीं मिलता | श्रुति परंपरा से ही वैदिक साहित्य के पठन-पाठन की परंपरा लंबे समय तक चलती रही | बिना लिपिबद्ध किये हुए ही वेद, वेदांग, ब्राह्माण ग्रंथ, आरण्यक और उपनिषद् जैसे उत्कृष्ट साहित्य की रचना कैसे संभव हो पायी होगी, यह समझना मुश्किल तो है, लेकिन बिना साक्ष्य के कोई दावा भी तो नहीं किया जा सकता | सिंधु सभ्यता का काल लगभग २५०० ई.पू. से १५०० ई.पू के बीच आँका गया है और वहाँ मिले पुरावशेषों से यह तो स्पष्ट हो गया है कि वह अत्यंत विकसित सभ्यता थी और इस काल में प्रचलित सिंधु लिपि में विविध प्रकार के लगभग ४०० संकेत हे | यह लिपि न तो वर्णमालात्मक है और न ही अक्षरमालात्मक और अभी तक यह पढ़ी भी नहीं जा सकी है | प्रसिद्द पुराविद डॉ.एस.आर. राव सिंधु लिपि का संबंध अशोककालीन ब्राह्मी लिपि से जोड़ते हैं, लेकिन अभीतक इसकी पृष्टि नहीं हो पायी है |

मोटे तौर पर तो भारत में सबसे पहले मिलने वाले अभिलेख सम्राट अशोक के हैं, जिनका शासन काल २७२ ई.पू. से २३२ ई.पू. तक रहा हे | ये लेख उस समय की प्राकृत (मागधी) में थे | अशोक ने इन लेखों की लिपि को धम्मलिपि कहा है,

लेकिन कालांतर में इस लिपि को ब्राह्मी लिपि कहा जाने लगा | गुणाकर मुले ने इसे अशोककालीन ब्राह्मी लिपि कहा है, क्योंकि हर काल में इसका स्वरूप बदलता रहा हे | यह एक पूर्ण विकसित वर्णमाला है, एक ध्वन्यात्मक लिपि है और एक वैज्ञानिक लिपि भी है | सिकंदर के हमले (३२६ ई.पू.) से पूर्व गांधार देश में ईरानी सम्राट के शासन काल में प्रचलित आरमेई लिपि के आधार पर विकसित खरोष्टी लिपि का प्रचार था | कहते हैं, उस समय सिकंदर के साथ भारत में आयी यूनानी लिपि भी प्रचलित थी | इसलिए अशोक ने अपने लेख इन स्थानीय लिपियों में खुदवाये | अशोक के इस समय के पाकिस्तान में स्थित मानहेसरा और शाहबाजगढ़ी के लेख खरोष्ठी लिपि में हैं | कंदहार के पास से अशोक का एक लेख आरमेई और यूनानी लिपि में भी मिला है | अशोक के पश्चिमोत्तर प्रांत को छोड़कर सभी लेख शेष भारत में ब्राह्मी लिपि में ही हैं | इससे स्पष्ट होता है कि उस समय ब्राह्मी लिपि का प्रचार सारे देश में था | निश्चय ही इस लिपि को सारे भारत में फैलने के लिए एक-दो सदी का समय तो लगा ही होगा |

तीन-चार लेख ऐसे भी हैं, जिनके बारे में पुराविदों का मत है कि ये अशोक के पहले के हैं | सहगौरा (गोरखपुर ज़िले) से एक ताम्रपत्र मिला है | अनेक विद्धानों का मत है कि यह ताम्रपत्र चंद्धगुप्त मौर्य (३२४ ई.पू. से ३०० ई.पू.) के समय का है | इस प्रकार महास्थान (बांग्ला देश) से प्राप्त एक लेख को अशोक के पहले का माना जाता है | पिप्रावा के प्राचीन बौद्ध स्तूप से एक धातु -पात्र मिला है,जिस पर 'सलिलनिधाने बुघस भगवते' शब्द ब्राह्मी लिपि में खुदे हुए हैं | कुछ विद्धानों का मत है की बौद्ध स्तूप तथा धातु-पात्र का निर्माण बुद्ध के निर्वाण (४८३ ई.पू.) के तुरंत बाद किया गया था | लंदन के ब्रिटिश संग्रहालय में एक बेबीलोनी फ़लक रखा हुआ है | यह फ़लक संभवत: ईसा पूर्व पाँचवीं सदी का है और इस पर ब्राह्मी लिपि और बेबीलोनी किलाक्षरी लिपि में एक लेख खुदा हुआ है | इस लेख के ब्राह्मी अक्षर अशोक की ब्राह्मी लिपि के अक्षरों से अधिक प्राचीन जान पड़ते हैं | इससे स्पष्ट है कि ब्राह्मी लिपि अशोक के पहले ही अस्तित्व में आ चुकी थी |

अशोक के बाद की दो-तीन सदियों में इस लिपि का थोड़ा विकास हुआ | ईसा के आरंभ की लगभग तीन सदियों की लिपिशैलियों को शुंगकालीन ब्राह्मी लिपि का नाम दिया जा सकता है | वैसे तो इस काल में शकों, सातवाहनों, इक्ष्वाकुओं और

पल्लवों के भी बहुत से लेख इस लिपि में हैं | ३६० ई.से ५५० ई. तक गुप्त काल में इस लिपि का और अधिक विकास हुआ, जिसे गुप्तकालीन ब्राह्मी लिपि कहा जा सकता है | गुप्त काल की उत्तर भारत की ब्राह्मी लिपि ईसा की पाँचवीं-छठी सदी में पश्चिमोत्तर भारत और मध्य एशिया में पहुँच गयी और वहाँ हस्तलिपियों में इसका इस्तेमाल होता है |

वस्तुतः गुप्त काल ब्राह्मण धर्म और संस्कृत भाषा के पुनरुत्थान का युग था | इस काल में संस्कृत भाषा के बहुत से ग्रंथ लिखे गये | जैन और बौद्ध पंडितों ने भी प्राकृत छोड़कर संस्कृत को अपना लिया | दक्षिण भारत के पल्लव शासकों ने भी संस्कृत को अपना लिया | गुप्तों के सारे लेख ही संस्कृत में हैं | इसी काल के लेखों में ओम् के चिह्न का भी विकास होता है | स्वर रहित व्यंजनों के लिए हलंत का प्रयोग होने लगता है | ब्राह्मी लिपि का विकास क्रम नदी के प्रवाह जैसा है | छठी सदी से उत्तर भारत के लेखों में अधिक कलात्मकता दिखायी देने लगी | अक्षरों की खड़ी रेखाएँ नीचे की तरफ़ बायीं ओर मुड़ जाती है और स्वरों की मात्राएँ अधिक लंबी, टंढ़ी-मेढ़ी और कलात्मक बनने लगीं | छठी से नौवीं सदी तक इस प्रकार की लिपि में उत्तर भारत के अनेक लेख गये | कुछ पुराविदों ने इस शैली को कुटिल लिपि नाम दिया है, लेकिन प्रसिद्ध इतिहासकार अल्बेरुनी (१०३० ई.) ने लिखा है कि कश्मीर, वाराणसी और मध्य देश (कन्नौज के आसपास के प्रदेश) में सिदधमातुका लिपि का प्रयोग होता है और मालवा में नागर लिपि का प्रचलन है | दक्षिण भारत में इसी लिपि को नंदिनागरी कहा जाता था और नंदिनागरी में लिखे गये लेख दक्षिण भारत में ८ मी सदी से ही मिलने लग जाते हैं और उत्तर भारत में ९ वीं सदी से | दक्षिण भारत में नागरी लिपि का खूब व्यवहार होता था | दर असल, नागरी के आरंभिक लेख हमें विंध्य पर्वत के नीचे के दक्खन प्रवेश से ही मिलते हैं | दक्षिण भारत में नागरी का प्राचीनतम लेख राष्ट्रकूट राजा दंतिदुर्ग का सामांगड दानपत्र (७५४ ई.) हैं | दंतिदुर्ग ने राष्ट्रकूट शासन की नींव डाली थी | ये राष्ट्रकूट मूलत: कर्नाटक निवासी थे और इनकी मातृभाषा कन्नड़ थी, परंतु खानदेश में बस गये थे | राष्ट्रकूट शासन के दौरान ही गणितज्ञ महावीराचार्य (८५० ई.) ने अपने गणितसार-संग्रह की रचना की | ८ वीं सदी में कोंकण प्रदेश में में शिलाहारों का राज्य स्थापित हो गया | इनके भी अनेक लेख नागरी में मिलते हैं | सुदूर दक्षिण से प्राप्त वरमुण का पलियम ताम्रपत्र (९ वीं सदी) नागरी लिपि में है | राजराज व राजेंद्ध जैसे प्रतापी चोल राजाओं (११ वीं

सदी) के सिक्कों पर देवनागरी के अक्षर मिलते हैं | १२ वीं सदी के केरल के शासकों के सिक्कों पर "वीरकेरलस्य" जैसे शब्द नागरी में अंकित हैं | श्रीलंका के पराक्रमबाहु और विजयबाहु (१२ वीं सदी) आदि शासकों के सिक्कों पर भी लिखे नागरी के अक्षर मिलते हैं | १४ वीं १५ वीं सदी में विजय नगर के शासकों ने अपने लेखों की लिपि को नंदिनागरी कहा है | विजय नगर के शासकों के लेख कन्नड़-तेलुगु और नागरी लिपि में मिलते हैं | जानकारी मिलती है विजय नगर के शासन-काल ही में पहले-पहल वेदों को लिपिबद्ध किया गया था और यह लिपि जरुर देवनागरी रही होगी |

उत्तर भारत में अल्पकाल के लिए इस्लामी शासन की नींव डालने वाले महमुद गजनवी (११ वीं सदी) के लाहौर के टकसाल में ढाई गये सिक्कों पर भी नागरी के अक्षर अंकित हैं | "अव्यत्क्कमेकं मुहम्मद अवतार नृपति महमूद "(१०२८ ई.) मुहम्मद गौरी, अलाउद्धीन खिलजी और शेरशाह सूरी ने भी अपने सिक्कों पर भी नागरी शब्द खुदवाए | बादशाह अकबर ने एक ऐसा सिकका चलाया था ,जिस पर राम-सीता की आकृति भी है और नागरी में "रामसीय" शब्द अंकित है | उत्तर भारत में मेवाड़ के गुहिल, सांभर-अजमेर के चौहान, कन्नोज के गाहड़वाल, काठियावाड़-गुजरात के सोलंकी, आबू के परमार, जेजाकभुक्ति (बुदेलखंड) के चंदेल तथा त्रिपुरा के कलचुरि शासकों के लेख नागरी लिपि में ही हैं | उत्तर भारत की इस लिपि को हम देवनागरी के नाम से जानते हैं |

इससे स्पष्ट है कि ईसा की ८ वीं-११ वीं सदी में हम नागरी लिपि को पूरे देश में व्याप्त देखते हैं | उस समय यह एक सार्वदेशिक लिपि थी | जहाँ भी संस्कृत की पुस्तकें प्रकाशित होती थीं, वहीं नागरी लिपि का प्रयोग होता था | इस नागरी लिपि के उदय के साथ ही भारतीय इतिहास व संस्कृति के एक नये युग की शुरुआत होती है | भारत इस्लाम के संपर्क में आता है और १३ वीं सदी से भारत में इस्लामी शासन शुरू हो जाता है | भारतीय समाज व बहुत-से संप्रदायों को एक व्यापक नाम मिलता है, हिंदू धर्म समाज और हिंदू धर्म | ठीक इसी तरह से दक्षिण भारत में नंदिनागरी और उत्तर भारत में नागरी नाम से प्रचलित लिपि मुख्यतः संस्कृत अर्थात् देववाणी के लिए प्रयुक्त होने के कारण देवनागरी कही जाने लगी | संभवतः यह नाम ११ वीं सदी से सार्वदेशिक लिपि के रूप में प्रचलित होने लगा | सन १७९६ में र्जान गिलक्राइस्ट द्वारा लिखित "हिंदुस्तानी भाषा का व्याकरण" देवनागरी लिपि में प्रकाशित हुआ |

सन १९३६ में कोलकाता से "उदन्त मार्तंड" नाम से देवनागरी लिपि में मुद्रित हिंदी का पहला अख़बार निकला |

इस प्रकार मुलतः देववाणी संस्कृत के लिए देवनागरी लिपि का प्रयोग आज भारत की राजाभाषा हिंदी, मराठी, कोंकणी, सिंधी, डोगरी, बोडो और नेपाली के लिए भी किया जा रहा है |

-: संदर्भ-संकेत :-

(१) हिन्दी भाषा का उदभव और विकास, डॉ. उदय नारायण

(२) हिन्दी भाषा और लिपि, डॉ अनार भट्ट

(३) हिन्दी व्याकरण, डॉ राम स्वरूप गुप्त